Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 2

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 19

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

11 मई 2017 ई 14 शअबान 1438 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

मैं हज़रत ईसा की शान का इन्कार नहीं करता, यद्यपि कि ख़ुदा ने मुझे सूचना दी है कि मसीहे मुहम्मदी मसीहे मूसवी से श्रेष्ठ है, पर मैं फिर भी मसीह इब्ने मरयम का बहुत सम्मान करता हूँ क्योंकि मैं आध्यात्मिक रंग से इस्लाम में ख़ातमुलख़ुलफ़ा हूँ , जैसा कि मरयम का बेटा मसीह इस्राईली धारा के लिए ख़ातमुलख़ुलफ़ा था। मूसा की धारा में मसीह इब्ने मरयम मसीह मौऊद था और मुहम्मदी धारा में मैं मसीह मौऊद हूँ। अतः मैं उसका सम्मान करता हूँ जिसका मैं हमनाम हूँ। वह मनुष्य उपद्रवी और झूठा है जो मुझे कहता है कि मैं मसीह इब्ने मरयम का सम्मान नहीं करता।

उपदेश हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

"निसन्देह तुम समझ लो कि ईसा इब्ने मरयम मर चुका है। कश्मीर श्रीनगर मुहल्ला[1] ख़ानयार में उसकी क़ब्र है। ख़ुदा ने अपनी पवित्र पुस्तक में उसकी मृत्यु की सूचना दी है। यदि इस आयत का अर्थ कुछ और है तो क़ुर्आन में ईसा इब्ने मरयम की मृत्यु की सूचना कहां है ? मरने के विषय में जो आयतें हैं, यदि उनका अर्थ कुछ और है जैसा कि हमारे विरोधी समझते हैं तो फिर क़ुर्आन ने उसके मरने को कहीं उद्धरित नहीं किया वह किसी समय मरेगा भी। ख़ुदा ने हमारे नबी के मरने की सूचना दी, परन्तु सम्पूर्ण क़ुर्आन में ईसा के मरने की सूचना नहीं दी। इसमें क्या भेद है ? यदि कहा जाए कि ईसा के मरने की[2] सूचना इस आयत में है कि-

فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ كُنْتَ اَنْتَ الرَّقِيْبَ عَلَيْهِمْ

अत: इस आयत से स्पष्ट है कि वह ईसाइयों के बिगड़ने से पूर्व ही मर चुके हैं। यदि आयत فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ का अर्थ यह है कि इस भौतिक शरीर सहित ईसा को आकाश पर उठा लिया तो परमेश्वर ने सम्पूर्ण क़ुर्आन में ऐसे मनुष्य की मृत्यु पर प्रकाश क्यों नहीं डाला, जिसके जीवित रहने के विचार ने लाखों मनुष्यों का विनाश कर डाला। अत: ख़ुदा ने उसको सदा के लिए इसलिए जीवित रहने दिया ताकि लोग अनेकेश्वरवादी और अधर्मी हो जाएं अर्थात इसमें लोगों का दोष नहीं अपितु परमेश्वर ने यह सब कुछ स्वयं किया ताकि लोगों को सद्मार्ग से दूर हटा दे। ख़ूब याद रखो कि मसीह की मौत के बिना सलीबी आस्था पर मृत्यु नहीं आ सकती। अत: इससे क्या लाभ कि क़ुर्आन की शिक्षा के विरूद्ध उसको जीवित समझा जाए। उसको मरने दो ताकि यह धर्म जीवित हो। ख़ुदा ने अपनी वही से मसीह की मृत्यु स्पष्ट की तथा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मैराज की रात में उसको मुर्दों में देख लिया, पर तुम हो कि अब भी नहीं मानते। यह कैसा ईमान है ? क्या लोगों की बातों को ख़ुदा की वाणी पर प्राथमिकता देते हो। यह कैसा धर्म है। हमारे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने न केवल साक्ष्य दी कि मैंने मुर्दा आत्माओं में ईसा को देखा बल्कि स्वयं मरकर यह भी सिद्ध कर दिया कि इस से पूर्व कोई जीवित नहीं रहा। हमारे विरोधी जिस प्रकार क़ुर्आन का परित्याग करते हैं, उसी प्रकार सुन्नत का भी, क्योंकि मरना हमारे नबी की सुन्नत है। यदि ईसा जीवित था तो मरने में हमारे रसूल का अपमान था। अत: तुम न अहले सुन्नत हो न अहले क़ुर्आन, जब तक कि ईसा की मौत को स्वीकार न करो। मैं हज़रत ईसा की शान का इन्कार नहीं करता, यद्यपि कि ख़ुदा ने मुझे सूचना दी है कि मसीहे मुहम्मदी मसीहे मूसवी से श्रेष्ठ है, पर मैं फिर भी मसीह इब्ने मरयम का बहुत सम्मान करता हूँ क्योंकि मैं आध्यात्मिक रंग से इस्लाम में ख़ातमुलख़ुलफ़ा हूँ , जैसा कि मरयम का बेटा मसीह इस्राईली धारा के लिए ख़ातमुलख़ुलफ़ा था। मूसा की धारा में मसीह इब्ने मरयम मसीह मौऊद था और मुहम्मदी धारा में मैं मसीह मौऊद हूँ अत: मैं उसका सम्मान करता हूँ जिसका मैं हमनाम हूँ। वह मनुष्य उपद्रवी और झूठा है जो मुझे कहता है कि मैं मसीह इब्ने मरयम का सम्मान नहीं करता। मसीह तो मसीह, मैं तो उसके चारों 2 भाईयों का भी सम्मान करता हूँ। क्योंकि पांचों एक ही मां के पुत्र हैं। यही नहीं बल्कि मैं तो हज़रत मसीह की दोनों सगी बहनों को भी पवित्र समझता हूँ। क्योंकि ये सब पवित्र मरयम के पेट से पैदा हुए हैं और मरयम की वह छवि है जिसने एक अरसे तक स्वयं को निकाह से रोका। फिर क़ौम के प्रतिष्ठित और सम्मानित लोगों के बहुत बल देने पर गर्भवती होने के कारण निकाह कर लिया ; यद्यपि कि लोग आपत्ति करते हैं कि तौरात की शिक्षा के विरुद्ध गर्भ की अवस्था में निकाह क्योंकर किया गया । पवित्र होने की प्रतिज्ञा को अकारण भंग किया गया और अनेक विवाह करने की बुनियाद क्यों डाली गई, अर्थात यूसुफ़ नज्जार की पहली पत्नी होने के बावजूद मरयम उससे निकाह करने हेतु क्यों तैयार हुई । परंतु मेरे नज़दीक यह सब विवशताएं थीं जो उनके समक्ष आ गईं। इस परिस्थिति में वे लोग दया के पात्र थे न कि आपत्ति के। "

(कश्ती नूह रूहानी ख़ज़ायन भाग 19 पृष्ठ 16 से 18)

1. इसाई अनुसंधान करने वालों ने इस राय को प्रकट किया है देखो किताब सुपर नेचुरल रिलीजन पृष्ठ 522 अगर विस्तार चाहते हो तो हमारी किताब तोहफा गोलड़िवया का पृष्ठ 139 देख लो। इसी में से।

2. इसी आयत से ज्ञात होता है कि ईसा अलैहिस्सलाम फिर दुनिया में नहीं आएंगे क्योंकि अगर वह दुनिया में आने वाले होते तो इस रूप में यह उत्तर हज़रत ईसा का केवल झूठ ठहरता कि मुझे इसाइयों के बिगड़ने की कोई ख़बर नहीं. जो आदमी दोबारा दुनिया में आया और चालीस बरस रहा और करोड़ों इसाइयों को देखा, जो उस को ख़ुदा जानते थे और सलीब तोड़ा और सारे इसाइयों को मुसलमान किया वह कैसे क़यामत के दिन अल्लाह तआला के समक्ष यह बात कर सकता है कि मझे इसाईयों के बिगड़ने की कोई सूचना नहीं। इसी में से।

3. कुरआन शरीफ ने इस आयत में स्पष्ट रूप से कश्मीर की तरफ इशारा किया है कि मसीह और उस की माता सलीब की घटना के बाद कश्मीर की तरफ चले गए थे जैसा कि फरमाता है وَاٰوَيْنٰهُمَآ اِلٰى رَبْوَةٍ ذَاتِ قَرَارٍ وَّمَعِيْنٍ

अर्थात हम ने ईसा और उस की माता को एक टीले पर जगह दी जो आराम की जगह थी और पानी स्वच्छ अर्थात स्रोतों का पानी वहां था। अत: इस में ख़ुदा तआला ने कश्मीर का नक्शा खींचा है। "आवा" का शब्द अरबी भाषा के शब्द कोष में किसी मुसीबत या कष्ट से पनाह देने के लिए व्यवहार में आता है और सलीब से पहले ईसा और उस की माता पर कोई युग मुसीबत के नहीं गुज़रा जिस से पनाह दी जाती। अत: निर्धारित हुआ कि ख़ुदा तआला ने ईसा और उस की माता को सलीब की घटना के बाद उस टीले पर पुंहचाया था। इसी में से।

4. यसूअ मसीह के चार भाई और दो बहने थीं ये सब यसूअ के वास्तविक भाई और वास्तविक बहने थीं अर्थात सब यूसफ और मर्यम की औलाद थी चार भाइयों के नाम ये हैं। यहूदा,याकूब, शमऊन, यूज़स और दो बहनों के नाम ये हैं आसिया, लीदिया। देखो किताब इपास्टोलिक रिकार्डस लेखक पादरी जान अलन गालेज़ प्रकाशक लन्दन 1886ई पृष्ठ 159-166। इसी में से। ☆ ☆ ☆

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

☆ सभी जातियों और संगठनों को मानवीय मूल्यों की स्थापना और दुनिया को शांति का गहवारा बनाने के लिए संयुक्त प्रयास करना चाहिए ☆ इस्लाम की शिक्षाऐं इस के नाम के अनुसार हैं, इस्लाम शब्द का मतलब ही शांति, प्यार और सद्भाव और सभी शिक्षाएं इन्हीं उच्च मूल्यों के आसपास घूमती है ☆ मेरा विश्वास है और यही मेरी शिक्षा है कि हर इंसान को चाहे वह किसी भी देश, शहर, कस्बे या गांव से संबंध रखता हो धर्म अपनाने और उस पर अमल करने का मौलिक अधिकार प्राप्त है और फिर प्रत्येक व्यक्ति को यह अधिकार भी प्राप्त है कि वह शांतिपूर्ण ढंग से अपने धर्म का प्रचार कर सके।

कनाडा संसद में सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लात तआला बेनसरहलि अज़ीज़ का ऐतिहासिक ईमान वर्धक ख़िताब संबोधित (भाग-1)

दिनांक 17 अक्तूबर 2016 को सय्यदना ज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ कनाडा की संसद "संसद हिल " में पधारे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ का संसद में यथा योग्य स्वागत किया गया। संसद में विभिन्न सीनेटरों, मिनिस्टरों ने हुज़ूर अनवर से मुलाकात की। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने संसद में दुनिया के हालात और शांति के बारे में ख़िताब फरमाया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ के खिताब को उलेमा ओ राजनेताओं और जीवन के विभिन्न विभाग से संबंधित लोगों ने बेहद पसंद किया और अपने विचार अभिव्यिक्त किए। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ का यह ईमान वर्धक ख़िताब पाठकों के लिए प्रस्तुत है (संपादक)

7 बजे हुज़ूर अनवर ने अंग्रेज़ी भाषा में अपना ख़िताब फरमाया।

ख़िताब

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़

बिस्मिल्लाह हिर्रहमानिर्राहीम - अल्लाह के नाम के साथ जो बड़ा मेहरबान और बार बार दयालु है।

सभी सम्मानित मेहमाना ! अस्सलामो अलैकुम वरहमतुल्लाहत व बरकातुहो। आप सब पर अल्लाह की रहमत और सुरक्षा नाज़िल हो। सबसे पहले तो आप सभी को और विशेष रूप से जुडी सगरो साहिबा का धन्यवाद करता हूँ कि आप ने मुझे यहाँ आने के लिए आमंत्रित किया।

बाद में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: मैं न कोई राजनीतिक व्यक्ति हूं और न ही किसी राजनीतिक संगठन का नेता हूँ बल्कि जमाअत अहमदिया का सार्वभौमिक प्रधान हूँ कि पूर्ण रूप से धार्मिक और आध्यात्मिक जमाअत है। इस बात को छोड़ते हुए कि इस का क्या बैकग्राउंड है, हम सब मानवता के नाते एकजुट हैं। सभी देशों और संगठनों को मानवीय मूल्यों की स्थापना और दुनिया को शांति का गहवारा बनाने के लिए संयुक्त प्रयास करना चाहिए। अगर मानव मूल्यों और मानव अधिकारों के किसी एक देश या क्षेत्र में उल्लंघन हो तो इससे दुनिया के अन्य भाग भी प्रभावित होते हैं और यह क्रूरता फिर अधिक बढ़ती चली जाती है। इसी तरह अगर दुनिया के किसी एक देश या एक क्षेत्र में मानवीय मूल्यों की स्थापना हो, अच्छाई और समृद्धि हो तो इसका सकारात्मक असर दुनिया के अन्य क्षेत्रों और लोगों पर भी पड़ेगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: अब तो नित नए संचार के माध्यमों और परिवहन के साधनों के कारण हम एक दूसरे के बहुत क़रीब आ चुके हैं और भौगोलिक सीमाओं के पाबन्द नहीं रहे। लेकिन अफसोस की बात है कि एक दूसरे से इस कदर जुड़े होने के बावजूद हम प्रतिदिन एक दूसरे से दूर रहे हैं। यह बहुत दु:खद बात है और दुख का कारण है कि एकजुट होने और मानव जाति में प्रेम के प्रसार के बजाय दुनिया ने घृणा, अत्याचार और अन्याय के प्रसार में बहुत अधिक योगदान दिया है। लोग अपनी विफलताओं की ज़िम्मेदारी ख़ुद लेने को तैयार नहीं हैं। प्रत्येक व्यक्ति दूसरे को दोषी ठहरा रहा है और अपने अतिरिक्त प्रत्येक को दुनिया के मतभेद और लड़ाई का कारण समझता है। हम इस समय बहुत अनिश्चितता से गुज़र रहे हैं और कोई भी वास्तविक रूप में अनुमान लगा नहीं सकता कि हमारे इन कार्यों के अस्थायी और दूरगामी परिणाम क्या होंगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: इस समय जबकि दुनिया भर में इस्लाम का डर बढ़ रहा है, मैं आपको विश्वास दिलाना चाहता हूं कि इस्लाम वैसा नहीं है जैसा आप मीडिया में सुनते हैं या देखते हैं। जितना मुझे इस्लाम का ज्ञान है वह तो यही है कि इस्लाम की शिक्षाएं इस के नाम के अनुसार हैं। इस्लाम शब्द का मतलब ही शांति प्यार और सद्भाव और सभी शिक्षाएं इन्हीं उच्च मूल्यों के आसपास घूमती हैं। लेकिन इससे भी इंकार नहीं किया जा सकता कि कुछ मुसलमान गिरोह ऐसे हैं जिनकी आस्थाएं और कार्य दुर्भाग्य से इस से पूर्ण रूप से विपरीत हैं, जो इस्लाम की बुनियादी शिक्षाओं के विपरीत इस्लाम के नाम पर भयानक अत्याचार और आतंकवाद कर रहे हैं। अत: उन बातों के मद्देनजर मैं आप के सामने इस्लाम की सच्ची और शांतिपूर्ण शिक्षा प्रस्तुत करूंगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: यह जगह जहां आप ने मुझे बड़ी हिम्मत से बुलाया है यह कोई धार्मिक स्थान नहीं है और हो सकता है कि अक्सर आप में से धर्म से व्यक्तिगत रुचि न रखते हों लेकिन बतौर कानून बनाने वालों के आप को कभी कभी ऐसे मामले पेश आते होंगे जिनका प्रभाव धार्मिक लोगों में होता है। इस संदर्भ में अल्लाह तआला कुरआन सूर: अलबक़रा: आयत 257 में स्पष्ट फरमाता है कि "धर्म में कोई बाध्यता नहीं" क्या ही स्पष्ट और व्यापक शिक्षा है जो अपने अंदर अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, विवेक और धर्म की आज़ादी और चिंतन की आज़ादी लिए हुए है। इसलिये मेरा विश्वास है और यही मेरी शिक्षा है कि हर इंसान को चाहे वह किसी भी देश, शहर, कस्बे या गांव से संबंध रखता हो धर्म अपनाने और उस पर अनुकरण करने का मौलिक अधिकार प्राप्त है और फिर हर व्यक्ति को यह अधिकार भी प्राप्त है कि वह शांतिपूर्ण ढंग से अपने धर्म प्रचार कर सके। बुनियादी मानव अधिकारों में आज़ादी की भी गारंटी होनी चाहिए और विधानसभाओं और सरकारों को चाहिए कि वह अनावश्यक रूप से उन मामलों में हस्तक्षेप न करें अन्यथा संभावना है कि उनके हस्तक्षेप को उत्तेजना पैदा करने वाला समझा जाए और निराशा और अशान्ति पैदा हो।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: खेद से कहना पड़ता है कि आजकल हम देख रहे हैं कि कैसे मुसलमान सरकारें ऐसे निजी मामलों में हस्तक्षेप कर रही हैं और उन देशों में अस्थिरता और मतभेद की बुनियादी वजह भी यही है। इससे केवल उग्रवादी धार्मिक नेताओं और आतंकवादियों को फायदा हो रहा है, जो लोगों की हताशा का लाभ उठाते हुए बर्बरता, दंगा और मूर्खता पूर्ण झगड़ों को हवा दे रहे हैं। लेकिन यह भी नहीं कहा जा सकता कि पश्चिमी सरकारें जो वास्तविक लोकतंत्र की दावेदार हैं, बिल्कुल मासूम और निर्दोष हैं। देखा गया है कि पश्चिम में कभी कभी ऐसे कानून और नियम तैयार किए जाते हैं कि वैश्विक धार्मिक स्वतंत्रता और सहनशीलता के वाहक होने के पश्चिमी दावों के खिलाफ हैं। कभी कभी ऐसे नियम बनाए जाते हैं जो इस दृष्टिकोण के विरोधी हैं कि पश्चिमी दुनिया में हर व्यक्ति स्वतंत्र है कि वह जो चाहे ईमान रखे और अपने धर्म के अनुसार शांति के साथ रह सके। यह समझदारी भरा कदम नहीं है कि सरकारें और विधानसभाएं लोगों के बुनियादी धार्मिक विश्वासों और रस्मों पर प्रतिबंध लगाएं। जैसा कि सरकारों को इससे कोई उद्देश्य नहीं होना चाहिए कि महिलाएं क्या कपड़ें पहनती हैं, उन्हें ऐसे क़ानून नहीं बनाने चाहिए कि धार्मिक इबादतगाह कैसी दिखना चाहिए। अगर वे अपनी शक्ति का दुरुपयोग करेंगे तो इससे समाज में अधिक चिंता और निराशा फैलेगी और अगर इन मामलों की ओर ध्यान न दिया गया तो यह बढ़ते चले जाएंगे और समाज की शांति को नुकसान होगा।

(शेष.....)

ख़ुत्बः जुमअः

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का विरोध तब से हो रहा है जब अभी नियमित जमाअत का गठन भी नहीं हुआ था और आप अलैहिस्सलाम ने बैअत नहीं ली थी। मुसलमानों ने भी और ग़ैर मुस्लिमों ने भी अपना पूरा ज़ोर आप के विरोध में लगाया और अब तक लगा रहे हैं। आज तो सब से आगे मुसलमान हैं लेकिन अल्लाह तआला आप की जमाअत को बढ़ाता चला जा रहा है। अब अल्लाह तआला की कृपा से जमाअत दुनिया के 209 देशों में स्थापित है। विशेष रूप से मुस्लिम देशों में जैसा कि मैंने कहा जहां भी लोग जमाअत की ओर अधिक ध्यान देते हैं वहाँ नियमित योजना से जमाअत का विरोध शुरू हो जाता है। कुछ राजनेता उलेमा और उनके प्रभाव में सरकारी कारिंदे बल्कि जैसा कि पहले भी बता चुका हूँ अदालतों के जज भी इस विरोध का हिस्सा बन जाते हैं।

आजकल अल्जीरिया में अहमदियों को अत्याचार का निशाना बनाया जा रहा है। उन मासूमों और पीड़ितों को हमें अपनी दुआओं में याद रखना चाहिए। अल्लाह तआला उन के कदमों में दृढ़ता प्रदान करे और इन ज़ुल्मों से भी बचाए। इसी तरह पाकिस्तान के अहमदियों को भी अपनी दुआओं में याद रखें। वहाँ भी आजकल पंजाब में विशेष रूप से नियमित योजना से अत्याचार किए जा रहे हैं।

यह मुखालफ़तें न पहले कुछ बिगाड़ सकीं और न भविष्य में इंशा अल्लाह तआला कुछ बिगाड़ सकेंगी। अल्लाह तआला की मदद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ हमेशा रही और हमेशा हम ने यही देखा कि दुश्मन असफल और अपमानित हुआ और हो रहा है और आगे भी इंशा अल्लाह तआला होता रहेगा। यह एक जगह विरोध करते हैं तो अल्लाह तआला सौ जगह तब्लीग़ के नए क्षेत्र खोल देता है। अल्जीरिया में ही उन्होंने अहमदियों को अपने विचार में समाप्त करने की कोशिश की और अख़बारों और अन्य मीडिया ने इसका चर्चा किया जमाअत विरोधी समाचार प्रकाशित किए गए फैलाए गए बल्कि अख़बारों ने भी विरोध में भरपूर रूप से विरोध में अपने तौरपर भरपूर भूमिका अदा की लेकिन यही बातें जो हैं जमाअत के तब्लीग़ का माध्यम बन गईं।

नए अहमदियों की दृढ़ता, विरोद्ध के बावजूद लोगों में जमाअत अहमदिया की तरफ ध्यान और तब्लीग़ के नए रास्तों के खुलने, विरोद्धियों के अपने बुरे इरादों में असफलता, अल्लाह तआला की तरफ से नेक प्रकृति लोगों का मार्गदर्शन और विभिन्न देशों में अल्लाह तआला के समर्थन के रौशन निशानों पर आधारित ईमान वर्धक घटनों का वर्णन।

डेनिश अहमदी हाजी नूह सेवन हैनसेन (Haji Nuh Svend Hansen) साहिब की वफात, मरहूम का ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़,
दिनांक 7 अप्रैल 2017 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ ۔

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का विरोध तब से हो रहा है जब अभी नियमित जमाअत का गठन भी नहीं हुआ था और आप अलैहिस्सलाम ने बैअत नहीं ली थी। मुसलमानों ने भी और ग़ैर मुस्लिमों ने भी अपना पूरा ज़ोर आप के विरोध में लगाया और अब तक लगा रहे हैं। आज तो सब से आगे मुसलमान हैं लेकिन अल्लाह तआला आप की जमाअत को बढ़ाता चला जा रहा है। अब अल्लाह तआला की कृपा से जमाअत दुनिया के 209 देशों में स्थापित है। विशेष रूप से मुस्लिम देशों में जैसा कि मैंने कहा जहां भी लोग जमाअत की ओर अधिक ध्यान देते हैं वहाँ नियमित योजना से जमाअत का विरोध शुरू हो जाता है। कुछ राजनेता उलेमा और उनके प्रभाव में सरकारी कारिंदे बल्कि जैसा कि पहले भी बता चुका हूँ अदालतों के जज भी इस विरोध का हिस्सा बन जाते हैं।

आजकल जैसा कि मैंने पिछले कई ख़ुत्बों में उल्लेख किया है अल्जीरिया में अहमदियों को अत्याचार का निशाना बनाया जा रहा है। जज भी यही कहते हैं, सरकारी कारिंदे भी यही कहते हैं कि अगर तुम इस बात से इनकार कर दो कि हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादियानी अलैहिस्सलाम का मसीह मौऊद होने का दावा झूठा है और वह मसीह मौऊद नहीं बल्कि नऊज़ो बिल्लाह इस्लाम विरोधी शक्तियों का एजेंट हैं और इस्लाम विरोधी ताकतों के समर्थन और पश्चिमी देशों का समर्थन उन्हें प्राप्त है और उन्हीं की तरफ से यह खड़े किए गए थे, विशेष रूप से अंग्रेज़ों की तरफ से तो हम तुम्हें बरी कर देते हैं अन्यथा फिर जेल और जुर्माने की सज़ा के लिए तैयार हो जाओ और फिर क्रूर निर्णय करके जो लोग इनकार करते हैं, जो ईमानों पर कायम हैं उन्हें फिर जेलों में डाला जा रहा है और बड़े जुर्माने भी किए जा रहे हैं, जिन को अदा करने की शायद उन ग़रीब लोगों में क्षमता भी न हो क्योंकि अक्सर गरीबों की है। बहरहाल उन मासूमों और पीड़ितों को हमें अपनी दुआओं में याद रखना चाहिए। अल्लाह तआला उन के कदमों में दृढ़ता प्रदान करे और इन ज़ुल्मों से भी बचाए।

इसी तरह पाकिस्तान के अहमदियों को भी अपनी दुआओं में याद रखें। वहाँ भी आजकल पंजाब में विशेष रूप से नियमित योजना से अत्याचार किए जा रहे हैं। मुस्लिम देशों ने अपने देशों के अंदर जो फसादों की स्थिति है और एक देश दूसरे देश के साथ संबंधों की जो हालत है बुद्धि रखने वालों के लिए यह स्थिति ही इस बात के सोचने के लिए पर्याप्त है और होनी चाहिए कि इन स्थितियों में अल्लाह तआला ने उम्मते मोहम्मदिया के सुधार के लिए अपने वादे के अनुसार जिसे भेजना था और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने जिस सच्चे ग़ुलाम के आने की भविष्यवाणी फरमाई थी उसे तलाश करें जबकि अल्लाह तआला और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बताई हुई निशानियां भी पूरी हो चुकी हैं और हो रही हैं जो मसीह मौऊद के आगमन के साथ जुड़ी हैं और यही एक रास्ता है जो मुसलमानों की महानता को फिर से स्थापित कर सकता है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक जगह फरमाते हैं कि

"बेशक याद रखो कि ख़ुदा के वादे सच्चे हैं। उस ने अपने वादे के अनुसार दुनिया में एक नज़ीर (डराने वाला) भेजा है दुनिया ने उसे स्वीकार नहीं किया लेकिन ख़ुदा तआला उसे ज़रूर स्वीकार करेगा और बड़े दृढ़ हमलों से उस की सच्चाई को प्रकट करेगा।" फरमाते हैं "मैं तुम्हें सच-सच कहता हूं कि मैं ख़ुदा तआला के वादे के अनुसार मसीह मौऊद होकर आया हूँ चाहो तो स्वीकार करो चाहो तो अस्वीकार करो मगर तुम्हारे अस्वीकार करने से कुछ नहीं होगा। ख़ुदा तआला ने जो इरादा किया है वह होकर रहेगा।

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 206 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

फिर आप फरमाते हैं "यह साफ बात है कि ख़ुदा तआला ने मुझे मसीह मौऊद के नाम से नियुक्त कर के दुनिया में भेजा है। जो लोग मेरा विरोध करने वाले हैं वह मेरा नहीं ख़ुदा तआला का विरोध करते हैं।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 189-190 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

अत: जमाअत के ख़िलाफ मुखाल्फ़तें जो हो रही हैं यह अल्लाह तआला जो चाहता है उसके ख़िलाफ चलने वाले लोग हैं और इस तरह यह अल्लाह तआला का विरोध कर रहे हैं और यह मुखाल्फ़तें न पहले कुछ बिगाड़ सकीं और न भविष्य में इंशा अल्लाह तआला कुछ बिगाड़ सकेंगी। अल्लाह तआला की मदद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ हमेशा रही और हमेशा हम ने यही देखा कि दुश्मन असफल और अपमानित हुआ और हो रहा है और आगे भी इंशा अल्लाह तआला होता रहेगा। यह एक जगह विरोध करते हैं तो अल्लाह तआला सौ जगह तब्लीग़ के नए क्षेत्र खोल देता है। अल्जीरिया में ही उन्होंने अहमदियों को अपने विचार में समाप्त करने की कोशिश की और अख़बारों और अन्य मीडिया ने इसका चर्चा किया जमाअत विरोधी समाचार प्रकाशित किए गए फैलाए गए बल्कि अख़बारों ने भी विरोध में भरपूर रूप से विरोध में अपने तौरपर भरपूर भूमिका अदा की लेकिन यही बातें जो हैं जमाअत के तब्लीग़ का माध्यम बन गईं।

अब अल्जीरिया की जमाअत कोई बहुत पुरानी जमाअत नहीं लेकिन अल्लाह तआला उन्हें इस विरोध के माध्यम से ही जहां ईमान मज़बूत कर रहा है वहाँ उनके लिए तब्लीग़ के रास्ते भी खोल रहा है। वहाँ के अहमदी लिखते हैं कि हम परेशान थे कि देश में तब्लीग़ कैसे होगी। उनमें यह जोश और भावना है तो अल्लाह तआला ने इस विरोध के द्वारा स्वयं प्रबंध कर दिया है। कहते हैं कि अगर कुछ लोग नकारात्मक प्रभाव ले रहे हैं और इसमें अधिकांश तथाकथित उलमा के पीछे चलने वाले लोग हैं तो ऐसे भी हैं और बहुत सारे ऐसे हैं, बड़ी संख्या में हैं जो जमाअत और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दावे से परिचित हुए हैं और समझते हैं कि जमाअत के ख़िलाफ जो हो रहा है वह ग़लत हो रहा है। अपने आप इस बारे में जानकारी भी ले रहे हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी यही फरमाया है कि विरोध में लिखा गया लिट्रेचर और हमारे ख़िलाफ जो लिखा हुआ लिट्रेचर है वह हमारी किताबें किताबें देखने की तरफ ध्यान दिलाता है।

(उद्धरित मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 398 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

इसी तरह आप ने इस बात को बयान फरमाते हुए कि आपके आने का यही समय था और अल्लाह तआला की तकदीर के अनुसार ही आप आए हैं ताकि इस्लाम की डोलती कश्ती को संभाला मिले। आप फरमाते हैं कि "सच्चे नबी और रसूल और मुजद्दिद की बड़ी निशानी यही है कि वह समय पर आए और ज़रूरत के समय आए।" ग़ैरों को संबोधित कर के फरमाया कि "लोग कसम खाकर कहें कि क्या यह समय नहीं है कि आसमान पर कोई तैयारी हो।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 397-398 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

लेकिन यह उन्हें भी पता है कि यह मुसलमानों की जो स्थिति है इस बात की मांग करती है कि कोई सुधारक आए। ख़ुद उनके बयान अख़बारों में भी छपते हैं अपने भाषणों में भी उल्लेख करते हैं इस बात की गवाही देते हैं कि मुस्लिम उम्मत को संभालने के लिए कोई आना चाहिए लेकिन यह भी साथ कह देते हैं कि मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादियानी के अतिरिक्त कोई हो।

बहरहाल जो ख़ुदा तआला की तरफ से होने का दावा कर रहा है उसे यह तथाकथित उल्मा मानते नहीं बल्कि इनकार कर रहे हैं और दुश्मनी कर रहे हैं और यह हर जगह करते चले जा रहे हैं जैसा कि मैंने कहा मुस्लिम देशों में विशेष रूप से कर रहे हैं लेकिन इसकी तुलना पर हम देखते हैं कि अल्लाह तआला दुनिया में अपने संदेश को पहुंचाना चाहता है और स्वीकार करवाना चाहता है। इस बारे में उसकी तकदीर भी काम कर रही है और लाखों लोग हर साल इस विरोध के बावजूद अहमदियत में दाख़िल होते हैं वह इस बात का सबूत है कि अल्लाह तआला का समर्थन तथा सहायता जमाअत अहमदिया के साथ है, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ है। कई ऐसे हैं जो अपनी घटनाएं लिखते हैं कैसे अहमदी हुए और उनकी घटनाओं को पढ़कर आश्चर्य होता है कि कैसे अल्लाह तआला नेक तबीयतों के लिए स्वीकृति के प्रबंधन कर रहा है। कुछ घटनाएं मैं प्रस्तुत करता हूँ।

यह पहली घटना जो पेश करूँगा यह अल्जीरिया की ही है जहां इस समय जैसा कि मैंने कहा विरोध ज़ोरों पर है। यह लिखने वाले साहिब कहते हैं कि अहमदियत के परिचय से बहुत पहले मैंने एक रात सपने में देखा कि एक ऊंची छत वाले विशाल हॉल में कई लोगों के साथ एक पंक्ति में हूँ जिसके एक छोर पर दो व्यक्ति खड़े हैं। वे कहते हैं हमारी लाइन में से प्रत्येक अपनी बारी पर इन दो व्यक्तियों में से दाएं वाले व्यक्ति के साथ बड़ी गर्मजोशी के साथ हाथ मिला कर हॉल के दरवाज़े की ओर चला जाता है। मानो यह लंबी लाइन इन दो में से एक व्यक्ति के साथ हाथ मिलाने के लिए विशेष रूप से बनाई गई है। कहते हैं मैं दूर से यह दृश्य देख कर कहता हूँ कि लोग दोनों के बजाय सिर्फ एक व्यक्ति से इतनी गर्म जोशी से क्यों हाथ मिलाते हैं? दोनों से क्यों नहीं करते।? तो निकट जाकर मैं देखता हूँ कि उनमें से एक व्यक्ति सफेद दाढ़ी वाला है जबकि उसके दाईं ओर वाला एक मध्यम लंबा और गेहूं रंग वाला व्यक्ति है जिस के सिर और दाढ़ी के बाल काले हैं। कहते हैं जब मेरी बारी आई तो मैंने सफेद दाढ़ी वाले व्यक्ति की तरफ हाथ बढ़ाया तो उसने मुझे काली दाढ़ी वाले और गेहूं रंग वाले व्यक्ति की ओर इशारा किया कि उनसे सलाम करो तो मैंने बहुत गर्मजोशी के साथ उनके साथ हाथ मिलाया और कहते हैं इसके साथ ही मेरा दिल उस व्यक्ति के प्रेम में डूब गया। वह मुझे देख कर मुस्कराया। उसकी मुस्कान एक ऐसा जादू था कि मैं आज तक इस मुस्कान को भुला नहीं सकता। फिर कहते हैं जब अहमदियत का परिचय हुआ और मैंने एम.टी ए देखना शुरू किया तो इन्हीं शुरुआती दिनों में एक दिन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तस्वीर दिखाई गई तो कुछ देर के बाद मेरा ख़ुत्बा प्रस्तुत हो रहा था। मेरी तस्वीर सामने आई तो कहते हैं दोनों को देखकर मुझे अपना सपना याद आ गया। सपने में दिखाए जाने वाला सफेद दाढ़ी वाला जो व्यक्ति था मेरे बारे में कहते हैं कि तुम थे जबकि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम काली दाढ़ी वाले थे जिन्हें सब लोग मिल रहे थे और मैं भी इशारा कर रहा था कि उन्हें मिलो। कहते हैं उसके बाद अहमदियों से इंटरनेट पर संपर्क किया। विभिन्न सवाल किए जिनके जवाब पाने के बाद मैंने बैअत कर ली।

फिर एक साहिब जिनकी घटना को देखकर लगता है कि अल्लाह तआला उन्हें घेरकर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में शामिल करना चाहता था। अल्लाह तआला को कोई नेक बात उनकी पसंद आई। यह मिस्र के हैं अब्दुल हादी नाम है यह कहते हैं कि अहमदियत से परिचय एम.टी.ए अलअरिबया द्वारा हुआ। प्रोग्राम उन को पसंद आता था लेकिन कहते हैं कि इमाम संस्थापक जमाअत अहमदिया की नबुव्वत और वह्यी वाला होना और इल्हाम वाला होना समझ नहीं आता था। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बारे में यह बात शंका में थी। कहते हैं कि मैंने बार बार कार्यक्रम अलहवार अलमुबाशिर में फोन करने की कोशिश की लेकिन हर बार असफलता का मुंह देखना पड़ता। संपर्क नहीं होता था और फोन का उद्देश्य क्या था।? कहते हैं सिर्फ एक सवाल था मेरा उद्देश्य और उसका हाँ या न में जवाब लेना था और सवाल था कि क्या जमाअत के संस्थापक अन्य नबियों की तरह निर्दोष हैं और क्या वह वह्यी और इल्हाम वाले हैं? कहते हैं अगर इसका जवाब मुझे हाँ दिया जाता तो इसी दिन इस चैनल को अपनी सूची से काट देता क्योंकि उस समय मेरा यही विश्वास था कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद इल्हाम बंद है और उसका दावा कर ने वाला झूठा है लेकिन ख़ुदा तआला की विशेष प्रकृति ऐसा हुआ कि मैं कभी भी कार्यक्रम में कॉल करने में सफल न हो सका जिसका परिणाम यह हुआ कि मैं एम.टी ए देखता रहा और धीरे-धीरे सभी मस्लों के साथ ख़त्मे नबुव्वत का मस्ला भी मेरी समझ में आ गया यहाँ तक कि मेरे सामने ज़माने के इमाम मसीह मौऊद और इमाम महदी की बैअत के अतिरिक्त कोई रास्ता नहीं बचा तो मैंने बैअत फार्म भर के भेज दिया। बैअत के बाद चाहता था कि यह ख़बर दूसरों तक भी पहुंचे। इसलिए इसके लिए मैंने अपने एक क़रीबी दोस्त को चुना जिसके बारे में मुझे बहुत अच्छी धारणा थी कि वह मेरी बात सुनेगा। मैंने इसे अहमदियत का संदेश पहुंचाया तो वह अप्रत्याशित रूप से अचानक बहुत क्रोध में आकर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की शान में गुस्ताखी करने लगा। कहते हैं मजबूर होकर उसे छोड़कर बहुत दुखी मन के साथ बेचैन रूह के साथ बोझिल कदमों से अपने घर लौट आया और आदत के अनुसार जब टीवी आन किया तो उस समय एम.टी.ए पर सूरे आले इमरान की यह आयत पढ़ी जा रही थी।

فَاِنۡ كَذَّبُوۡكَ فَقَدۡ كُذِّبَ رُسُلٌ مِّنۡ قَبۡلِكَ جَآءُوۡ بِالۡبَيِّنٰتِ وَ الزُّبُرِ وَ الۡكِتٰبِ الۡمُنِيۡرِ

(आले इम्रान 185) कि अत: अगर उन्होंने तुझे झुठला दिया है तो तुझ से पहले भी रसूल इनकार किए गए थे। वह खुले खुले निशान और इलाही सहीफे और प्रकाशित किताब लाए थे।

कहते हैं यह आयत मेरे दिल की हालत के लिए दरूद और सलाम हो गई और मुझे विश्वास हो गया कि यह कोई संयोग नहीं बल्कि ख़ुदा तआला की तरफ से मेरे

लिए संदेश है कि रसूलों का विरोद्ध और उनसे मज़ाक तो होता चला आया है फिर अगर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ ऐसा हुआ तो यह कोई नई बात नहीं लेकिन नबियों की इस हालत के बावजूद ख़ुदा तआला की मदद और सहायता से उनका विजयी होना दुनिया के लिए ख़ुदा तआला की हस्ती का महान सबूत और ख़ुदा तआला के मामूरीन की प्रामाणिकता की स्पष्ट दलील है। कहते हैं यह सोच कर मेरी पहली हालत जाती रही और ख़ुदा तआला के इस नेअमत पर शुक्र की भावना पैदा हो गई कि उसने अपने ज़माने के इमाम की बैअत की तौफ़ीक़ प्रदान फरमाई और उसके मुनकरीन में नहीं बनाया।

देखें एक नेक प्रकृति को तो अल्लाह तआला ने बचा लिया लेकिन दूसरे की पता नहीं यह स्थिति नहीं थी उस पर अल्लाह तआला की कृपा नहीं हुई और न केवल प्रभावित नहीं हुआ बल्कि बदबख़्ती के कारण दिलेर भी हुआ और जिसने बैअत की थी उसकी तसल्ली अल्लाह तआला ने त्वरित माध्यम से भी पैदा फरमा दिए, न केवल सांत्वना देने के लिए बल्कि उसे जो सदमा था उस को दूर भी कर दिया।

फिर एक महिला की घटना है जिन्हें अल्लाह तआला ने उनके नेक स्वभाव के कारण बैअत की तौफ़ीक़ अता फरमाई। बावजूद इसके यह मुसलमानों के बारे में जो सामान्य आतंकवाद की अवधारणा है इस वजह से यह हमारे से भी डर भी रही थीं लेकिन फिर भी अल्लाह तआला ने ऐसे समान पैदा कर दिए है। अफ्रीका की रहने वाली एक गांव की रहने वाली महिला हैं जो गिनी के एक बड़े शहर बोके(Boke) के निकट गांव में रहती हैं। हाजा आमी फ़ादी(Haja Amia Faiga) इन का नाम है उनका कहना है कि एक दिन उनके पास जमाअत अहमदिया का एक मुअल्लिम आया और जमाअत की तब्लीग़ की और सालाना जलसा में शामिल होने की दावत दी। इन दिनों वहां जलसा हो रहा था। कहती हैं संदेश तो ज़ाहिर है अच्छा था पहले जलसा में शामिल होने के लिए तैयार हुई और कार में पेट्रोल आदि भी डलवा दिया। अच्छी खाती पीती महिला थीं लेकिन रहती गांव में थी। कहती हैं इन दिनों इस्लामी संगठनों के हवाले से आतंकवाद की घटनाओं की वजह से मैंने सोचा कि कहीं यह जमाअत भी ऐसी ही न हो इसलिए जलसा में जाने का इरादा छोड़ दिया कि पता नहीं वहाँ क्या होना है। लेकिन मन में यह दुआ करने लगी कि हे अल्लाह यदि यह लोग सच्चे हैं तो यह हमारे गांव में दोबारा तब्लीग़ के लिए आएं। ख़ुदा के लिए ऐसा हुआ कि कुछ समय बाद लिखने वाले कहते हैं कि हमारी मिशनरी टीम बिना प्रोग्राम के उनके गांव चली गई। जब इस महिला ने हमें देखा तो ख़ुशी से उनके आँसू निकल आए और कहने लगी कि अल्लाह तआला ने मेरी दुआ सुन ली है और इस तरह सारी परिवार बैअत कर के जमाअत में सम्मिलित हो गया।

कुछ लोगों पर अल्लाह तआला मेहरबान होता है तो उन्हें वित्तीय लाभ के द्वारा भी ईमान में तरक्की और अपने भेजे हुए को स्वीकार करने की तौफ़ीक़ प्रदान फरमाता है लेकिन यह कोई शर्त नहीं है। कुछ लोग लिखते हैं कि अमुक कहता है कि अगर मुझे यह लाभ हो जाए, यह मेरा काम हो जाए तो तब मैं अहमदियत स्वीकार करूंगा। अहमदियत स्वीकार करना न अल्लाह तआला पर उपकार है न हज़रत मसीह मौऊद पर कोई एहसान है। अपनी दुनिया और परलोक संवारनी होती है इसलिए अल्लाह तआला के संदेश को सुनना और समझना और उसे स्वीकार करना चाहिए। बहरहाल एक घटना है अल्लाह तआला कई बार किसी पर फज़ल करना चाहे तो इस शर्त को स्वीकार कर लेता है, इस की अभिव्यक्ति कर के हो इस को दिखा भी देता है।

गैम्बिया के अमीर साहिब कहते हैं कि निया मीनी ज़िला के एक गांव में एक महिला सनतो (Suntu) साहिबा जमाअत की तीव्र विरोधी थीं जब भी उनके सामने जमाअत का नाम लिया जाता तो बहुत क्रोध में आ जातीं और जमाअत के ख़िलाफ बड़ी कठोर भाषा का प्रयोग करतीं और कहती कि अहमदी लोग काफिर हैं। यह अहमदी ख़ुद तो जहन्नम में जाएंगे बल्कि जो व्यक्ति उनके साथ संपर्क रखेगा वह भी जहन्नम में जाएगा। आप खेतीबाड़ी करती थीं उनकी खेतीबाड़ी थी लेकिन पिछले दो साल से उनकी फसल ख़राब हो रही थी। कभी कीड़ा लग जाता कभी दूसरे जानवर खेत में आकर उनकी फसल ख़राब कर देते। उन्हें समझ नहीं आ रही थी कि बहरहाल उन्हें समझ नहीं आ रही थी कि क्या कारण है। कहते हैं हमारी एक अहमदी बहन ने उन्हें कहा कि देखो जब से तुम जमाअत का विरोध कर रही हो तब तुम्हारी फसल नहीं हो रही इसलिए तुम जमाअत का विरोध छोड़ कर जमाअत में शामिल हो जाओ तो अल्लाह तआला फज़ल करेगा। अत: उसे उसी समय ही समझ आ गई। उन्होंने कहा चलो अनुभव करती हूँ। वह अपने परिवार के आठ लोगों के साथ जमाअत में शामिल हो गई। जमाअत में शामिल होने के बाद उन्होंने देखा कि अल्लाह तआला ने उन पर बहुत फज़ल किए। न केवल यह कि उनकी फसल भरपूर रंग में होने लगी बल्कि उनका एक जवान बेटा था जो पिछले कई साल से लापता था उस से संपर्क हो गया जो इटली में था। अब यह महिला हर किसी से यह कहती है कि जमाअत अहमदिया में शामिल हो जाओ क्योंकि उसी में मुक्ति है।

मुबल्लिग़ सिलिसला बेनिन लिखते हैं कि इस साल बारिश के महीने में बासीलह शहर में भयंकर तूफानी बारिश हुई जिसकी वजह से मिशन हाउस की एक दीवार गिर गई। रात को भी बारिश जारी रही खतरा था कि दूसरी दीवार भी गिर जाएगी और कहते हैं जमाअत के मिशन हाउस का नुकसान हो रहा था बड़ा परेशान था तो मुझे दुआ का ख्याल आया। यह विचार भी हमारे मुबल्लिग़ों को ही आ सकता है कि हे अल्लाह तआला इस नुकसान को तो बैअतों के द्वारा पूरा कर दे और जमाअत को तरक्की दे। कहते हैं मैंने अभी दुआ समाप्त नहीं की थी कि फोन की घंटी बजने लगी। रात बारह बजे का समय था। बारिश और बिजली की भीषण कड़क थी। मैंने फोन उठाया तो एक व्यक्ति बोला जिसका नाम मुहम्मद था। वह एक गोचा (Gucha) नामक एक गांव से बात कर रहा था और उसने कहा कि गांव वाले बैअत करना चाहते हैं। वह गांव मिशन हाऊस से जहां यह था 110 किलोमीटर दूर था। कहते हैं बहरहाल मैं उनके पास अगले दिन या कुछ दिन बाद गांव में गया तो वहाँ 198 लोग बैअत कर के जमाअत में प्रवेश कर गए और बड़ा विरोद्ध भी है लेकिन वहां हर प्रकार के विरोध के बावजूद उनमें दृढ़ता है और अपने ईमान पर स्थापित हैं।

जर्मनी से मुबल्लिग़ लिखते हैं कि एक सीरियन परिवार से लगभग एक साल से उनका संपर्क में था। उन्होंने पिछले साल जर्मनी जलसा में भी भाग लिया। जलसा का माहौल देखा बड़े प्रभावित हुए लेकिन उन्होंने बैअत नहीं की थी। वे सीरियन परिवार ख़ुद कहते हैं कि हम इटली के रास्ते जर्मनी आए थे इसलिए हमारे वकील ने कहा था कि आप लोगों का केस कमज़ोर है और संभव है कि आप को वापस इटली भिजवा दिया जाए। इसलिए जलसा के बाद कहते हैं हम इसी उम्मीद पर थे कि हमें कोर्ट का या सरकार का पत्र वापस जाने का आ जाएगा लेकिन घर पहुंचे तो कोर्ट से पत्र आया था जिसमें उन्होंने लिखा था कि यह उन्हें पता है कि हम इटली के रास्ते जर्मनी आए हैं लेकिन साथ ही इस पत्र में न्यायाधीश द्वारा ज्ञापन भी था कि चूंकि आप लोग सीरियन हैं इसलिए उन्हें जर्मनी से कहीं और भिजवाने की ज़रूरत नहीं है। तो कहते हैं यह बात जो थी मेरे लिए बड़ा चमत्कार था। तुरंत दिल में ख्याल आया कि यह जलसा में जाने की बरकत है और मैंने अपनी पत्नी को बताया कि ख़ुदा तआला ने हमें जलसा में शामिल होने पर यह चमत्कार दिखाया है। अत: इसके बाद उनके दिल में बैठा कि क्योंकि जमाअत की वजह से हुआ है इसलिए उन्होंने तुरंत बैअत का फैसला किया और जमाअत में शामिल हो गए।

अत: अल्लाह तआला के भी मार्गदर्शन देने के अजीब तरीके हैं। कुछ लोग समझते हैं यद्यपि कि कई घटनाएं ऐसी हैं जो मैंने बताए भी हैं कि अफ्रीका में तब्लीग़ भी इतनी आसान नहीं काफी मुश्किल है लेकिन लोगों का मानना है कि अनपढ़ लोग हैं गरीब हैं इसलिए आसानी से अहमदियत स्वीकार कर लेते हैं लेकिन यह बिल्कुल ग़लत बात है। इन अनपढ़ों को भी जो उनके तथाकथित उलमा हैं उन्होंने अपनी आजीविका और विशिष्टता स्थापित करने के लिए अजीब अजीब प्रकार के रस्मो रिवाज और बिदअतों से पीड़ित किया हुआ है और उनके विद्वानों के पीछे चलने वाले उनसे अलग होना नहीं चाहते और उन्हीं की वजह से जमाअत का विरोध भी होता है जैसा पहले भी एक दो घटनाओं मैं वर्णित किया है कि वहाँ अफ्रीका में लोग विरोध भी कर रहे हैं। तो बहरहाल वहाँ भी अहमदियत स्वीकार करना इतना आसान नहीं है लेकिन अल्लाह तआला फिर भी लोगों के लिए मार्गदर्शन के माध्यम पैदा फरमाता रहता है और हमारे मुबल्लिग़ों और मुअल्लमों के लिए भी कैसे उन्होंने तब्लीग़ करना है।

आइवरी कोस्ट के मुल्लिग़ एक घटना का ज़िक्र करते हुए कहते हैं कि सैन पैदरो क्षेत्र के स्थानीय मुअल्लिम एक गांव में तब्लीग़ के लिए गए जिसके परिणाम में इस गांव के इमाम सहित पंद्रह लोगों ने अहमदियत स्वीकार कर ली। बाद में इमाम राष्ट्रीय जलसा सालाना आइवरी कोस्ट में शामिल हुए ताकि जमाअत के लोगों को क़रीब से देखने का मौका मिले। जलसा देखकर बड़े ख़ुश हुए और मस्जिद के लिए अपनी एक ज़मीन भी पेश की लेकिन यह सब लोग शहर के एक बड़े इमाम के अधीन थे। गांव में पहले जुम्अ: की नमाज़ नहीं अदा की जाती थी बावजूद इसके कि वहाँ इमाम था और कारण यह बताया जाता था कि शहर से बड़े इमाम को बुलाकर फिर कोई गाय या बकरी ज़िब्ह करके दावत की जाए उसके बाद फिर जुम्अ: हो सकता है नहीं तो जुम्अ: नहीं हो सकता। अनुमति नहीं है। तो यह अजीब ग़रीब प्रकार के बिदअत उन्होंने वहाँ प्रचलित की हुई हैं और बड़े मौलवी साहिब जो हैं जब उन्हें फुर्सत मिलती विभिन्न स्थानों से दावत खाने के बाद जब उनका नंबर आता तभी किसी गांव में जा के जुम्अ: पढ़ाते थे और इसलिए जुम्अ: पढ़ना जो

एक मोमिन का प्राथमिक कर्तव्य है इससे उन्हें वंचित किया हुआ था। हदीस में तो आता है कि तीन जुम्ए जिसने लगातार छोड़े उसके दिल पर दाग़ लग गया।(सुनन इबने माजा किताब इकामतुस्सलात हदीस 1125) तो बहरहाल इन मौलवी साहिबों की यह अपनी शीरयत थी। तो गांव के इस छोटे मौलवी को जब यह बताया गया कि जुम्अ: की नमाज़ के लिए इन चीजों की ज़रूरत नहीं है इस पर उसने वापस गांव जाकर लोगों को समझाने की कोशिश की कि हम जुम्अ: की नमाज़ अदा कर सकते हैं और इसमें कोई रोक नहीं है। जरूरी नहीं है बड़े मौलवी की दावत हो तो जुम्अ: अदा होगा। इस पर गांव के लोगों ने जो दूसरे लोगों ने जो अहमदी नहीं हुए थे उन्होंने विरोध किया और इमाम को अपनी मस्जिद में जुम्अ: पढ़ाने की अनुमति नहीं दी। इस पर इमाम ने एक अस्थायी छप्पर बनाकर कुछ अहमदियों के साथ जुम्अ: की नमाज़ अदा की, जिस पर फिर इन शरारती लोगों ने इस छप्पर को तोड़ दिया, गिरा दिया। तो फिर यह कहते हैं कि मैं और स्थानीय मुअल्लिम और कुछ अहमदी दोस्तों को साथ लेकर गांव के मुखिया के पास गए और सारी बात समझाई। चीफ ने फैसला किया कि अगर मस्जिद वाले आप की मस्जिद में नमाज़ नहीं पढ़ने देते तो किसी दूसरी जगह नमाज़ पढ़ लें। जब दो जगह नमाज़ होगी तो लोग ख़ुद ही फैसला कर लेंगे किस मस्जिद में जाकर नमाज़ पढ़ें। बहरहाल कहते हैं अल्लाह तआला की कृपा से इस गांव में अब अहमदियत की बरकत से नियमित जुम्अ: शुरू हो गया है और बावजूद विरोध के जमाअत के लोग बड़ी दृढ़ता से अपने ईमान पर भी कायम हैं और जुम्अ: भी अदा कर रहे हैं।

सपनों के माध्यम से बहुत से लोगों को अल्लाह तआला मार्गदर्शन करता है। दुनिया में हर जगह इस तरह मार्गदर्शन होता है। कन्नूर केरल भारत के मुबल्लिग़ इन्चार्ज एक नए अहमदी के अहमदियत स्वीकार करने की घटना लिखते हैं कि बैअत से पहले काफी परेशान रहते थे। जिस पर उन्हें किसी ने बताया कि आपकी परेशानी का समाधान अत्यधिक दरूद शरीफ पढ़ना है। आप दरूद शरीफ बहुत अधिक पढ़ा करें। इसलिए महोदय ने दरूद शरीफ पढ़ना शुरू कर दिया। एक दिन उन्होंने सपने में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की कब्र मुबारक देखी और एक ख़ाली कब्र को भी देखा। वहाँ एक व्यक्ति आया और उसने कहा कि हज़रत मुहम्मद रसूसुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया है कि जल्द ही आप से मुलाकात होगी। जब उन्होंने यह सपना ग़ैर अहमदी मौलवी को सुनाया तो उसने कहा कि यह मुबारक सपना है आप को एक उच्च स्थान पर पहुंचने वाले हैं। इस सपने के कुछ दिनों बाद एक यात्रा के दौरान उनकी एक अहमदी से मुलाकात हुई, जिस पर इस अहमदी ने कहा कि आप के शहर में जो मस्जिद नूर है वहाँ ज़रूर जाएं। अत: उसके अनुसार वह एक दिन जमाअत की नूर मस्जिद में आए और जुम्अ: की नमाज़ में शामिल हुए वहां इनका जमाअत के परिचय हुआ और नियमित जमाअत की पुस्तकों का अध्ययन करने लगे। फिर बैअत कर के जमाअत में शामिल हुए तो कहते हैं इस तरह से स्पष्ट हुआ कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से जल्द मुलाकात करने का अर्थ जमाअत अहमदिया में शामिल होना था।

फिर बेनिन के मुबल्लिग़ वर्णन करते हैं कि हमारे मुअल्लिम हमदी जिब्राईल अहमदी साहिब एक स्थानीय रेडियो पर तब्लीग़ के कार्यक्रम किया करते थे। एक दिन उनके कार्यक्रम में एक महिला की कॉल आई कहने लगीं कि मेरे लिए आश्चर्य की बात है कि मसीह का पुनरागमन हो गया है और हमें पता ही नहीं। मैं मुसलमान हूं और मेरा परिवार ईसाई है और मुझे इस बात पर लाजवाब कर देते हैं कि मुसलमान तो ख़ुद कहते हैं कि उनकी हिदायत के लिए मसीह का आगमन होगा तब उन्हें हिदायत मिलेगी। तो वह कहती है कि आप मेरे गांव आए और उन्हें तब्लीग़ करें। इसलिए इस गांव में कुछ तब्लीग़ी बैठकों से इस गांव के 227 लोगों ने बैअत कर के अहमदियत स्वीकार कर ली।

जहां मौलवी का ज़ोर चलता है वहाँ वह डरा-धमका कर अहमदियत से दूर करने की कोशिश भी करता है लेकिन अल्लाह तआला ने उन मौलवियों के इस काम की वजह से लोगों को अहमदियत स्वीकार करने की तौफ़ीक़ अता फरमाई है। कई ऐसी घटनाएं हैं एक घटना का उल्लेख करता हूँ। जाम्बिया के उत्तरी प्रांत के एक शहर (Mporokoso) मपोर कोसो है। इस के बारे में वहाँ के मुबल्लिग़ साहिब लिखते हैं कि पिछले साल इस जगह पर जमाअत का गठन हुआ वहाँ पर मौलवियों ने एक बैठक बुलाई।(वहां पुराने मुसलमान हैं) जिस में विभिन्न लोगों को आमंत्रित किया गया जिसमें एक मोहम्मद सईद साहिब भी थे जिनका हमारी जमाअत से संपर्क था लेकिन अहमदी नहीं हुए थे। बैठक के दौरान मौलवी कहने लगे कि हम क़ादियानियत को किसी कीमत पर तरक्की करते हुए नहीं देख सकते इसलिए हमने तय किया है कि जहां भी ये लोग जाएंगे हम उनका पीछा करेंगे और उन्हें डराएंगे धमकाएंगे और अगर लोग जमाअत से पीछे न हटे तो हमें उन्हें जान से भी मारना पड़े तो वह भी कर देंगे। इन मौलवियों ने सईद साहिब से कहा कि आप भी अहमदियों से किसी प्रकार का संबंध न रखें। (उन्हें पता था कि आना जाना है) उन्हें धमकी दी गई कि अगर आप जमाअत अहमदिया के साथ अपना संबंध न काटा तो हम किसी भी हद तक जा सकते हैं। परिणाम क्या हुआ कि मोहम्मद सईद साहिब मौलवियों की इस बैठक के बाद अपने परिवार सहित जमाअत अहमदिया में शामिल हो गए। उन्होंने आ कर कहा अच्छा तुम मुझे धमकाओ में बैअत करता हूँ। इसके अलावा भी इस बैठक के बाद शहर से कोई 25 लोग जमाअत में शामिल हो गए। डराने का नतीजा यह निकला कि उन पर सच्चाई खुल गई और जो पहले अहमदी थे उनसे भी जमाअत संख्या बढ़ गई और जमाअत की आगोश में आ गए। यही हाल अल्जीरिया में हो रहा है जैसा कि मैंने कहा है। अहमदियत का परिचय बढ़ रहा है और वहाँ के रहने वाले लोगों का मानना है कि एक समय आएगा जब व्यापक लोग अहमदियत में यहाँ शामिल होना शुरू हो जाएंगे। इंशा अल्लाह

फिर एक घटना का ज़िक्र करते हुए अमीर साहब तंज़ानिया लिखते हैं कि निया नगासारा (Nyangamara) में एक लंबे समय से जमाअत की स्थापना थी लेकिन वहाँ केवल एक दो परिवार अहमदी थे। इस साल अर्थात 2016 ई में स्थानीय जमाअत के सदस्यों के सहयोग से वहाँ नियमित तब्लीग़ी कार्यक्रम किया गया जिसमें दर्शकों को ख़िलाफत के महत्त्व के बारे में बताया गया। इसलिए लोगों को समय के ख़लीफा को देखने का शौक पैदा हुआ। इन लोगों ने एक ग़ैर जमाअत जिसके पास डिश और टीवी था इससे आवेदन कि वह अपने टीवी पर एम.टी ए लगाए। इसलिए उसने एम. टी ए लगाया और लोगों को टीवी पर ख़लीफतुल मसीह को देखने का मौका मिला। इस तरह जमाअत के लिए तब्लीग़ का नया रास्ता खुल गया। कहते हैं इस साल (इसी साल जिस साल का जिक्र हो रहा है अर्थात 2016 ई में) हमारा प्रतिनिधिमंडल अगले महीने फिर उन में तब्लीग़ के लिए गया तो एक मौलवी ने कार्यक्रम के दौरान फित्ना डालने की कोशिश की और हमें लगा कि शायद यह कार्यक्रम सफल नहीं हो सकेगा लेकिन अल्लाह तआला की सहायता ऐसी हुई कि तब्लीग़ी कार्यक्रम और सवाल और जवाब के बाद स्थानीय लोगों में से कुछ जिन्होंने अभी तक बैअत नहीं थी उनके मौलवी साहिब कहने लगे कि अगर अहमदी काफिर हैं हम भी अहमदी हैं तुम इस गांव से निकलो अहमदी नहीं निकलेंगे। अत: मौलवी के इस विरोध के कारण लोगों का जमाअत की तरफ अधिक रुझान हुआ और कुल 38 लोगों ने अहमदियत को स्वीकार करने की सआदत पाई और नई बैअत करने वालों में एक ने अपनी एक ज़मीन भी मस्जिद के लिए दी और एक नए अहमदी ने कहा कि चूंकि मेरा घर बड़ा है तथा अन्य मित्रों के घरों के पास भी है इसलिए मस्जिद बनने तक नमाज़ जमाअत के साथ मेरे घर में अदा की जाए। अत: अब दैनिक इस जगह जमाअत के दोस्त इकट्ठे होकर नमाज़ अदा करते हैं।

तो इस प्रकार की कई घटनाएं हैं जहां विरोध के चलते या लालच देकर भी अहमदियत से दूर हटाने की कोशिश की गई लेकिन अल्लाह तआला के यह काम हैं जैसा कि पहले हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि प्रतिदिन तरक्की हो रही है। ख़ुद लोग कई जगह परिचय प्राप्त करके आते हैं और हम इन चीज़ों को देखकर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की इस बात को भी पूरा होता देखते हैं।

आप फरमाते हैं कि "याद रखो कि अल्लाह तआला सब कुछ आप ही किया करता है।" फिर फरमाते हैं कि "ठंडी हवा चल पड़ी (है) अल्लाह तआला के काम धीरज के साथ होते हैं।" होंगे और ज़रूर होंगे लेकिन धीरे धीरे हो रहे हैं और होते चले जाएंगे। इंशा अल्लाह तआला। अत: मुसलमानों को बजाय हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का विरोध करने के इस बात पर विचार करना चाहिए जो आपने उन्हें संबोधित कर कि फ़रमाया कि "यह याद रखें कि यदि हमारे पास कोई दलील न होती लेकिन समय के

हालात पर नज़र करके मुसलमानों पर वाजिब था कि वह दीवानों की तरह फिरते और तलाश करते कि मसीह अब तक क्यों सलीब को तोड़ने के लिए नहीं आया।" अब बजाय विरोध करने के तलाश करना चाहिए था। ज़माना इस बात की मांग कर रहा था कि तलाश किया जाए। फरमाया कि "अगर मुल्लाओं को मानव जाति की भलाई और कल्याण ध्यान में होता तो वह कभी ऐसा नहीं करते जैसा हम से कर रहे हैं। उन्हें सोचना चाहिए था कि उन्होंने हमारे ख़िलाफ फतवा लिखकर क्या बना लिया है। जिसे ख़ुदा तआला ने फरमाया था कि हो जाए उसे कौन कह सकता है कि न हो।" फरमाया कि "ये लोग जो हमारे विरोधी हैं यह भी हमारे नौकर चाकर हैं।" विरोधी भी हमारे नौकर चाकर हैं "कि किसी न किसी रंग में बात पूर्व और पश्चिम तक पहुंचा देते हैं।"

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 397-398 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

कुछ घटनाएं जो मैंने बयान कीं और अल्जीरिया और पाकिस्तान में भी लोग यही प्रकट करते हैं कि विरोध के कारण अहमदियत का परिचय अधिक बढ़ रहा है। इसलिए हमें विरोध की कोई चिंता नहीं। चाहे अल्जीरिया हो या पाकिस्तान या कोई और मुसलमान देश। हमारी तब्लीग़ इन विरोधियों द्वारा पहले से बढ़कर हो रही है और अहमदियत का परिचय प्राप्त हो रहा है।

विरोधियों और उल्मा को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की इस बात पर विचार करना चाहिए। आपने फ़रमाया कि "याद रखो कि अगर मुझे स्वीकार नहीं करोगे तो फिर तुम कभी भी आने वाले मौऊद को नहीं पाओगे।" फिर फरमाया "मेरी नसीहत है कि तक्वा को हाथ से न दो और अल्लाह को समक्ष रखते हुए इन बातों पर विचार करो और तंहाई में इस बात को सोचो और अंत अल्लाह तआला से दुआएं करो कि वह दुआओं को सुनता है।

(मल्फूज़ात भाग 7 पृष्ठ 176 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

अगर नेक नीयत से दुआ करोगे तो वह दुआ सुनेगा और मार्गदर्शन करेगा। अत: अल्लाह तआला करे कि ये लोग इस योग्य हों कि अल्लाह तआला का मार्गदर्शन पाने वाले हों और अल्लाह तआला उनके सीने खोले।

नमाज़ के बाद एक नमाज़ जनाज़ा ग़ायब भी पढ़ाऊंगा जो आदरणीय हाजी नूह सेवन हैनसेन (Haji Nuh Svend Hansen) साहिब का है। यह डेनिश अहमदी थे परसों उनकी वफात हुई है। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। 28 जून 1929 ई को कोपेनहेगन में जन्म हुआ। धार्मिक दृष्टि से उनका संबंध लौथन चर्च से था। डेनमार्क के एक प्रसिद्ध फलासफर और डेनिस सुधारक (Grundtving) ग्राउंडविंग से बहुत प्रभावित थे और खेती बाड़ी वाले परिवार से उनका संबंध था। हैनसेन साहिब ने 1951 में तकनीकी विश्वविद्यालय डेनमार्क में रसायन इंजीनियरिंग में एम.एस सी की फिर मलेशिया में नौकरी के लिए चले गए। 26 जनवरी 1956 ई में इस्लाम स्वीकार किया और इस्लाम स्वीकार करने का प्रारंभिक कारण एक मुस्लिम महिला से शादी करना थी लेकिन इसके बाद उन्होंने ख़ुद ही बड़ा गहरा इस्लाम का अध्ययन किया और फिर दिल की गहराई से इस्लामी शिक्षाओं का पालन करना शुरू किया। 1964 ई में अपनी पत्नी के साथ पहला हज करने की तौफ़ीक़ पाई और वहाँ उन्होंने नमाज़ में ख़ुदा तआला के सम्मुख यह दुआ की कि हज अदा करने में जो खामियां और कमज़ोरियों रह गई हैं हे ख़ुदा, तू उन्हें माफ कर दे और जब रूहानी दृष्टि से बेहतर हो जाऊँ तो मुझे एक बार फिर हज की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमा। इसलिए अल्लाह तआला ने आप की दुआ इस रंग में स्वीकार फ़रमाया कि उन्हें अहमदियत स्वीकार करने की तौफ़ीक़ मिली और फिर अहमदियत स्वीकार करने के बाद एक बार फिर उन्होंने हज किया और कई उमरे किए । 1965 ई में आपका संबंध जमाअत से स्थापित हुआ। हज़रत चौधरी ज़फरुल्लाह खान रज़ियल्लाहो अन्हो 1968 ई में जब वक्फ आरज़ी के लिए डेनमार्क गए तो महोदय चौधरी साहब के साथ पर्याप्त रहे। तब तक बैअत नहीं थी लेकिन अहमदियत की शिक्षा से प्रभावित हो रहे थे। कुछ सवाल उनके मन में थे। 1969 ई में पाकिस्तान की यात्रा की। हज़रत चौधरी साहब के यहां ठहरे और यात्रा के दौरान रबवा भी गए। हज़रत ख़लीफतुल मसीह सालिस से मुलाकात का सौभाग्य मिला। तब तक आप अहमदियत का बड़ा गहरा अध्ययन कर चुके थे लेकिन पूरी तरह तसल्ली नहीं हुई थी तो हुज़ूर रहिमहुल्लाह से मुलाकात करने के दौरान आप ने उन से कुछ सवाल भी पूछे और इसलिए फिर कहते हैं वहीं अहमदियत की वास्तविकता मुझ पर प्रकट हो गई तो वापस आकर 7 अप्रैल 1969 ई को हज़रत ख़लीफतुल मसीह सालिस की सेवा में अपनी बैअत का पत्र भेजा और अहमदियत में शामिल हुए।

1974 ई फिर 1988 ई में कादियान भी उन्हें जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और वहाँ उन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मज़ार पर खड़े होकर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सलाम पहुंचाया। 1974 ई के बाद से 1988 ई तक राष्ट्रीय सचिव माल डेनमार्क के पद पर सेवा की तौफ़ीक़ पाई और इस प्रणाली में सुधार किया। 1985 में हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबि रहमहुल्लाह ने आप को अमीर जमाअत डेनमार्क निर्धारित फरमाया। इससे पहले आप 27 अप्रैल 1983 ई को उप अमीर नियुक्त हुए थे। हज़रत चौधरी ज़फ़रुल्लाह खान सवीन हैनसेन साहिब के बारे में कहते हैं कि उनकी पत्नी मलाया की मुसलमान हैं। पति पत्नि केवल औपचारिक मुसलमान नहीं बल्कि श्रद्धावान और नमाज़ तथा रोज़े के पाबन्द हैं। चौधरी साहिब कहते हैं कि कम से कम मैंने किसी पश्चिमी मुसलमान को इस्लाम के मूल्यों में इस कदर रचा हुआ नहीं देखा है।

उन्हें कुरआन के नए प्रकाशन और अनुवाद का भा मौका मिला तौफ़ीक़ मिली। 1989 में डेनिश कुरआन का संशोधित संस्करण कम्प्यूटरीकृत कंपोज़िनग के साथ प्रकाशित हुआ। इस में साइन हंसी साहब ने बहुत सेवा कीं। मीडसन साहिब के साथ मिल कर उनकी बहुत मदद की और हमेशा 1986 ई से लेकर जब तक उनका स्वास्थ्य रहा पिछले दो साल तक लगभग या हर साल जलसा में आते थे यहाँ यू.के में भी और हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबि के ज़माना में जो अंतरराष्ट्रीय शूरा होती थी वहाँ हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबि के सहयोग का भी उन्हें सम्मान उन्हें मिला। सेकंड नीवेन देशों की साझा पत्रिका Active Islam के संपादक भी रहे। 1981 ई को पहले ज़ईम आला अंसारुल्लाह डेनमार्क का चुनाव हुआ तो साइन हंसी साहिब ज़ईम निर्वाचित हुए और 1986 ई तक रहे। साइन हैनसेन साहिब की पत्नी अहमदी नहीं थीं बल्कि ज्यादा विरोधी थीं लेकिन इसके बावजूद उन्होंने उनसे सहानुभूति और स्नेह का व्यवहार रखा लेकिन जमाअत की सेवाओं में भी कोई कमी नहीं आने दी। चंदे में बड़े नियमित थे। वित्तीय कुर्बानी में बढ़चढ़ कर भाग लेने वाले थे और जो क्षमता अगर निकलती तो एक जगह उन्होंने रखी हुई थी खाते में डाल देते हैं। जब डेनमार्क से सेवानिवृत्त होकर जाने लगे तो अपनी कार भी मिशन को दे दी। उनके बारे में उनकी वित्तीय कुरबानी के बारे में हज़रत ख़लीफतु लमसीह राबि ने एक पत्र में लिखा कहा था कि साइन हैनसेन साहिब की कुरबानी अनुकरणीय है। यह माशा अल्लाह शुरू से ही ईमानदारी और समर्पण का सार थे और वित्तीय कुरबानी का नमूना हैं। कभी उन्हें याद दिलाने की ज़रूरत नहीं पड़ी। आगे लिखते हैं कि ख़ुदा करे कि बाक़ी जमाअत के दोस्त भी उन्हीं की तरह हो जाएं तो सचिव माल का काम केवल रिकॉर्ड रखना होगा और याद कराने पर समय न लगाना पड़े और ख़ुदा करे कि ऐसा ही हो।

अब नमाज़ के बाद नमाज़ जनाज़ा पढ़ाउंगा। अल्लाह तआला मरहूम के स्तर ऊंचा करे और उनकी पत्नी और बच्चों को भी अहमदियत स्वीकार करने और अहमदियत का पालन करने की तौफ़ीक़ प्रदान करे।

☆ ☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

لَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ

(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वे कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बंधित कर देते तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह और की जान की शिरा काट देते ।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब कादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे प्राय: उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित किया गया है। किताब प्राप्त करने के लिए इच्छुक पोस्ट कार्ड/मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**

Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186

Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab

For On-line Visit : www.alislam.org/urdu/library/57.html

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP -45/2017-2019 Vol. 2 Thursday 11 May 2017 Issue No. 19

MANAGER : NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
ANNUAL SUBSCRIPTION : Rs. 300/-

जो रमज़ान बिना सच्ची कुरबानी के गुज़रता है वह रमज़ान नहीं और जो तहरीक जदीद बिना रूह की ताज़गी के गुज़र जाती है वह तहरीक जदीद नहीं।

तहरीक जदीद के संस्थापक सय्ययदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ि अल्लाह तआला ने रमज़ान के महीने साथ तहरीक जदीद की गहरी समता पर प्रकाश डालते हुए फरमाते हैं:

" अगर तुम रमज़ान का लाभ उठाना चाहते हैं तो तहरीक जदीद का पालन करो और अगर तहरीक जदीद को फायदा पहुंचाना चाहते हैं तो रोज़ों से उचित लाभ उठाए। तहरीक जदीद यही है कि सरल जीवन व्यतीत करो और कड़ी मेहनत और परिश्रम और कुर्बानी का अपने आप को आदी बनाओ। यही सबक रमज़ान तुम्हें सिखाने के लिए आता है। अत: जिस उद्देश्य के लिए रमज़ान आया है इसी उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए संघर्ष करो .... हर व्यक्ति को कोशिश करनी चाहिए कि उसका रमज़ान तहरीक जदीद वाला हो और तहरीक जदीद रमज़ान वाली हो। रमज़ान हमारे नफस को मारने वाला हो और तहरीक जदीद हमारी रूह को ताज़गी प्रदान करने वाली हो। अत: जब मैंने कहा कि रमज़ान से लाभ उठाओ तो दरअसल मैंने तुम्हें समझाया है कि तुम तहरीक जदीद के उद्देश्य रमज़ान के आलोक में समझो। और जब मैंने कहा है कि तहरीक जदीद की तरफ ध्यान करो तो दूसरे शब्दों में मैंने तुम्हें यह कहा है कि तुम हर हालत में रमज़ान की स्थिति अपने ऊपर वारिद रखो और सही कुरबानी और लगातार कुरबानी की अपने अंदर आदत डालो। जो रमज़ान बिना सच्ची कुरबानी के गुज़रता है वह रमज़ान नहीं और जो तहरीक जदीद बिना रूह को ताज़ा किए गुज़र जाती है वह तहरीक जदीद नहीं।"

(ख़ुत्बा जुम्अ: 4 नवम्बर 1938 ई)

इसी संदर्भ में 11 नवम्बर 1938 ई के ख़ुत्बा जुम्अ: में हुज़ूर अनवर ने जमाअत के लोगों को तहरीक जदीद का चंदा देने वालों के के लिए खास तौर से दुाआओं की तरहीक करते हुए फरमाया:

" रमज़ान के जो अंतिम दस दिन आने वालें हैं उसे तहरीक जदीद से संबंधित पहले की कुरबानियों के लिए धन्यवाद और भविष्य के लिए शक्ति पाने के लिए खर्च करो। जिन्हें पिछले सालों में कुरबानी की तौफ़ीक़ मिली है वह इसके लिए अल्लाह का शुक्रिया अदा करें और हर एक दुआ करने वाला अल्लाह तआला से हर कुरबानी करने वाले के लिए दुआ करे कि उसने धर्म के वैभव और सिलसिला की मज़बूती के लिए जो कुरबानी की है उसके परिणाम स्वरूप अल्लाह तआला उस पर अपनी कृपा और आशीर्वाद करे। और उसके लिए अपनी मुहब्बत और बरकतों को नाज़िल फरमाए। इसी प्यार और ईमानदारी के अनुसार जिसके साथ उसने खुदा की राह में कुरबानी की था। आमीन। " (अल्फज़ल 15 नवम्बर 1938 ई पृष्ठ नंबर 4)

जमाअत के श्रद्धालुओं का शुरू से ही इस तरीका रहा है कि वह हमेशा रमज़ान के मध्य तक अपने वादे चंदा तहरीक जदीद शत प्रतिशत अदा करके अल्लाह तआला के फज़लों तथा बरकतों को ग्रहण करने की कोशिश करते हैं। इसलिए अब जबकि हम अल्लाह तआला की दी हुई शक्ति से एक बार फिर अनगिनत आसमानी रहमतों और बरकतों से युक्त इस पवित्र महीने में कदम रखने वाले हैं, समस्त तहरीक जदीद की सहायकों से निवेदन है कि वह अपनी शानदार जमाअत की परंपराओं को बनाए रखते हुए 20 रमज़ान अर्थात 16 जून तक अपने बकाया पूर्ण रूप से करके हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरहलि अज़ीज़ की स्वीकृत दुआओं से भरपूर हिस्सा पाने का सौभाग्य प्राप्त हो। अल्लाह हम सबको इसकी तौफ़ीक़ प्रदान फरमाए। आमीन।

समस्त ज़िला और स्थानीय अमीरों, सदरों और तहरीक जदीद सैक्टरियों और मुबल्लिग़ इन्चार्ज साहिबों से भी अनुरोध किया जाता है कि कृपया अपनी अपनी जमाअतो की शत प्रतिशत अदायगी की सूचियाँ 16 जून से पहले पहले डाक द्वारा और 21 जून तक फैक्स या ईमेल द्वारा वकालत माल तहरीक जदीद कादियानी को भिजवाकर दें ताकि सारी जमाअतों की सामूहिक सूची 29 रमज़ान तक दुआओँ के लिए सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनसरहिल अज़ीज़ की सेवा में प्रस्तुत की जा सके। जज़ाकमुल्लाह।

(वकीलुल माल तहरीक जदीद कादियान)

☆ ☆ ☆

रूहानियत का मौसम बहार रमज़ानुल मुबारक और रहमत का दरवाज़ा वक्फे जदीद।

अल्लाह तआला के बेहद फज़ल तथा एहसान है कि रमज़ान का महीना एक बार फिर हमारे जीवन में अपनी बरकतों और फयूज़ के साथ आ रहा है। रमज़ान का महीना रूहानियत का बहार का मौसम है। यह नेकियों का महीना है और अपनी कमज़ोरियों और कमियों को दूर करने के लिए प्रशिक्षण का महीना है। अल्लाह तआला की प्रसन्नता को ग्रहण करने और सदकों का महीना है। अल्लाह तआला हम सब को इस महीने की रूहानियत से यथा शक्ति लाभ उठाने की तौफ़ीक़ व प्रदान करे आमीन।

इस पवित्र महीने में सभी प्रकार की इबादतों के साथ सभी प्रकार की कुरबानी का का भी ज़िक्र है जिसमें वित्तीय कुरबानी भी एक प्रतिष्ठित स्थान रखती है। इस महीने में नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपनी कमर कस कर लिया करते थे। तेज़ हवाएं भी अपनी तेजी में आप की उदारता का मुकाबला नहीं कर सकती थीं।

सय्यदना हज़रत अक़दस मसीह मौऊद इस संदर्भ में फरमाते हैं:

"अगर इस्लाम के समर्थन में तुम अपनी उदारता के हाथ खोल दो तो तुरंत तुम्हारे अपने लिए भी कुदरत का हाथ प्रकट हो जाता है। इस रास्ते में खर्च करने के लिए कोई ग़रीब नहीं हो जाया करता। अगर हिम्मत पैदा हो जाए तो ख़ुदा ख़ुद ही सहायक बन जाता है। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अंसार को देखो कि कैसे उन्होंने काम किया ताकि तुम्हें पता लगे कि धर्म की मदद से दौलत का स्रोत पैदा हो जाता है। "

(मजमूआ इश्तेहार, जिल्द 2, पृष्ठ 613, इश्तेहार सितम्बर 1903 ई)

हज़रत ख़लीफतुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह तआला ने इस पवित्र महीने के संबंध में जमाअत के लोगों को मुखातिब होकर फरमाया कि

"हे मेरे प्रिय भाइयों! इस महीने रहमतों के लुटाने का महीना है। ख़ुदा आसमान से पृथ्वी पर केवल इसलिए आया कि उसके बन्दे उसके सामने झोलियाँ फैलाएँ और उसकी रहमत को, उसकी माफी को, उसके फज़लों को, उसकी खुशी को पाएं, उसकी प्रसन्नता प्राप्त करें, उसके नूर से अपने सीने और दिल को मुनव्वर करें।"

इसी प्रकार फरमाते हैं कि

" ख़ुदा तआला की रहमत(दया) के कई दरवाज़ों में से एक रहमत का दरवाजा जो हम पर खोला गया है वह वक्फ जदीद का दरवाज़ा है इस प्रणाली के द्वारा हज़रत मुस्लेह मौऊद ने हमारे लिए नेकियाँ करने और रहमतें कमाने का सामान पैदा कर दिया है।"

(ख़ुत्बा जुम्अ: 30 दिसंबर 1966 ई)

इंशा अल्लाह पहले की तरह इस साल भी रमज़ान मुबारक के अंत में चंदा वक्फे जदीद की पूरी अदायगी करने वाले व्यक्ति / जमाअत / ज़िला के नाम दुआ के लिए सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला की सेवा में पहुंचााए जाएंगे। अत: मुजाहिदीन वक्फे जदीद से निवेदन है कि वह इस मुबारक महीने में पूरी अदायगी कर के सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरहिल अज़ीज़ की स्वीकृत दुआओं से भरपूर हिस्सा पाने का सौभाग्य प्राप्त करें इसी प्रकार जमाअत के समस्त उहदेदारों और मुबल्लिग़ों और मुअल्लिमों से अनुरोध है कि इस मुबारक महीने में चंदा वक्फे जदीद पूर्ण अदा करने वाले जमाअत के व्यक्तियों की सूची तय्यार फार्म पर तैय्यार करके 25 रमज़ान तक इस दफतर में भिजवा दें। जज़ाकमुल्लाह

अल्लाह तआला हम सबको अपने वादों की ध्यानपूर्वक समीक्षा कर के और अपनी ज़िम्मेदारियों को यथा शक्ति अदा करते हुए हुज़ूर अनवर की उम्मीदों से बढ़ कर वृद्धि के साथ वक्फे जदीद के लक्ष्य को शीघ्र पूरा करने की तौफ़ीक़ प्रदान फरमाए। आमीन।

(नाज़िम माल वक्फ जदीद भारत)

☆ ☆ ☆

☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad